राजेन्द्र यादव की कहानियों में नारी

संजय पासवान
सहायक प्राध्यापक,
हिन्दी विभाग,
खड़गपुर कॉलेज,
पश्चिम मिदनापुर

सारांश

राजेन्द्र यादव अपने समय के गंभीर चिंतक एवं सशक्त कथाकार रहे हैं। उनके साहित्य में समकालीन युगीन परिवेश उभरकर आया है। राजेन्द्र यादव की कहानियों में व्याप्त नारी संवेदना पर सूक्ष्म अध्ययन कर विस्तार से विचार किया गया है। महानगर में रहने के कारण उन्होंने मध्यवर्गीय स्त्रियों को नजदीक से देखा, जाना है इसलिए मध्यवर्गीय नारियों का यथार्थ एवं प्रभावी रूप में चित्रण करने में सफल हुए हैं। मध्यवर्गीय स्त्रियाँ समय के साथ किस प्रकार बदलती हैं तथा सामाजिक समस्याओं को सहती हुई अपने अस्तित्व को बनाने के लिए किस प्रकार प्रयत्नशील रहती है इसका चित्रण किया गया है। यादव जी का मानना है कि....वस्तुतः सामंती व्यवस्था में नारी सिर्फ एक वस्तु है, सम्भोग और संतान की इच्छा पूर्ति करने वाली मादा। यहाँ सेवा, उपयोग और वफादारी के बदले पुरूष नारी को उसी तरह सजाता, सुरक्षा देता और उसकी जिम्मेदारी लेता है जैसे अपने हाथियों घोड़ों और बैलों को सजाता, सवाँरता और सुरक्षा देता है।'' साथ ही यादव जी यह भी मानते हैं कि स्त्री स्वातंत्र्य ही स्त्री की ताकत है उसकी अपनी सुरक्षा है।''(काँटे की बात–3 पृ0–120) यादव जी की कहानियों की नारियाँ गुप्त जी की यशोधरा की ''आँचल में है दूध, आँखों में पानी जैसी नहीं है। 'कामायनी' की श्रद्धा की तरह ''नारी तुम केवल श्रद्धा हो......जैसी भी नहीं है। सदियों से सामाजिक समस्या, पारिवारिक समस्या, वैवाहिक समस्या, विधवा समस्या, यौन पवित्रता की समस्या, नारी की शिक्षा की समस्या,, नारी की क्रय–विक्रय की समस्या, दासी प्रथा की समस्या, मनोवैज्ञानिक समस्या, ऐसी अनेक समस्याओं से श्रृंखलित नारी जीवन के इर्द–गिर्द अनेक ज्वलंत प्रश्न हैं। राजेन्द्र यादव की कहानियों में नारी इन्हीं समस्याओं से लड़ती टकराती नजर आती हैं एवं अपना एक स्वतंत्र जीवन की ओर उन्मुख होती हैं। राजेन्द्र यादव की कहानियों में नारी की इन्हीं समस्याओं पर विस्तार से चित्रण किया है।

मुख्य शब्दः 'प्रतीक्षा', 'भविष्य के आस पास मँडराता अतीत', 'अनुपस्थित संबोधन', 'खुले पंख टूटे डैने', 'प्रतिहिंसा', 'पुराने नाले पर नया फ्लैट', 'नीराजना', 'एक कटी हुई कहानी', 'लकड़हारा', 'खानदानी घर', 'लैटले हुए', 'हासिल', 'छोटे–छोटे ताजमहल', 'जहाँ लक्ष्मी कैद है'', 'नास्तिक'।

प्रस्तावना

भारतीय स्वाधीनता के पश्चात कहानी के विषय वस्तु में बदलाव आया। देश के राजनीतिक परिस्थिति में जिस प्रकार का परिवर्तन आया, उसे देखकर नई पीढ़ी का मोहभंग हुआ। समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार से लेकर साहित्य, राजनीति समस्त क्षेत्रों में इस कदर परिर्वतन हुआ, जो उनके मन में यातना एवं पीड़ा को जन्म देने वाला था। वर्षों से अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष करती नारियों ने घर से निकलकर बाहरी दुनिया को देखना–समझना आरम्भ किया। शिक्षा और नौकरियों में लड़कियाँ – लड़कों के बराबर खड़ी दिखाई देने लगीं। पुरुष प्रधान परिवार एवं समाज में लड़कियों के प्रति परम्परागत सोच में बदलाव आने लगा। नई कहानी आन्दोलन के मुख्य त्रयी राजेन्द्र यादव की कहानियों में नारी के इसी रुप को विभिन्न रुपों में देखा जा सकता है।

राजेन्द्र यादव की कहानियों में अनेक नारी पात्र वैवाहिक जीवन की समस्या का दंग झेलते हुए पारिवारिक अलगाव की स्थिति तक पहुँच गई हैं। 'भविष्य के आस पास मँडराता अतीत' की कथा नायिका अपने दाम्पत्य जीवन से संतुष्ट नहीं है और अपने पति की मौजूदगी के कारण उसे तनाव में रहना पड़ता है। उसे अपने पति की आदतें और हरकतें पसंद नहीं है इस कारण वह अपनी छोटी बच्ची को लेकर पति से अलग हो जाती है। 'एक कटी हुई कहानी' की नीता भी कुछ इसी प्रकार की पात्र है वह अपने अकेलेपन से छुटकारा पाने के

लिए वीरेश्वर नामक युवक का संग साथ चाहती है। उधर सुधा को पता चलता है तो दोनों में अनबन होती है और परिवार टूटने के कगार पर पहुँच जाता है। 'टूटना' कहानी की किशोर और लीना दोनों सामाजिक बंधन को तोड़कर एक तरफ तो प्रेम विवाह करने में सफल होते हैं परन्तु कालान्तर में हीन भावना के कारण दोनों अलग भी हो जाते हैं। लीना में उच्चवर्गीय संस्कार है जिसे वह छोड़ नहीं पाती और किशोर निम्न मध्यवर्गीय पात्र है। उसे लीना के तौर तरीके पसंद नहीं है। किशोर के अनुसार लीना जिद्दी और दम्भी है। दोनों अपने दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य नहीं बैठा पाते और वे अलग हो जाते हैं। 'छोटे–छोटे ताजमहल' की राका और देव की भी यही स्थिति है वे दोनों भी अपने दाम्पत्य जीवन में सामंजस्य नहीं बैठा पाते और विजय की उपस्थिति में ताज परिसर में अलग हो जाते हैं। 'प्रतिहिंसा' कहानी स्त्री–पुरूष के बीच सामंजस्य न बैठ पाने के कारण अलग होने की कथा है। कथा नायक एस. चौधरी का प्रभा के साथ विवाह हुए अभी दो वर्ष भी नहीं हुए हैं और उसका पति प्रभा पर अशिक्षित होने का आरोप लगाकर उसका परित्याग करता है और एक एंग्लो इंडियन लड़की से शादी कर लेता है। चौधरी उच्चस्तरीय समाज में प्रभा को उठने बैठने लायक नहीं समझता। वह उसे अशोभनीय लगती है। इस कारण वह प्रभा को छोड़ देता है। प्रभा इस बात को सहन नहीं कर पाती और उसके अन्दर अपने पति के प्रति एक प्रतिहिंसा और प्रतिवाद का भाव जागृत हो जाता है। 'अपने पार' कहानी में पति–पत्नी के बीच टकराहट और अलगाव की कथा को उजागर किया गया है। पति–पत्नी में आए दिन किसी न किसी बात को लेकर टकराव होता रहता है इस कारण कथा नायक अपनी पत्नी को छोड़कर दूसरे के साथ रहने लगता है। भारतीय समाज में दहेज कोढ़ की तरह फैला है और इस कारण कई परिवार बर्बाद हो रहे हैं प्रेमचंद की कहानियों में दहेज प्रथा के कई दुष्परिणाम देखने को मिलते है। आजादी के कई वर्षों बाद भी भारतीय समाज को इस रोग से मुक्ति नहीं मिल पाई है। राजेन्द्र यादव के कई कहानियों में इसे देखा जा सकता है। 'लकड़हारा' कहानी दहेज के कारण टूटते रिस्तों को वयां करती है। कथानायिका शोभा एक पढ़ी लिखी शिक्षित युवती है उसके पिता गरीब हैं और अपनी सामर्थ्य के अनुसार दहेज की रकम भी अदा करते हैं मगर ठीक कन्या दान से पहले लड़के के पिता द्वारा और रकम की माँग आती है। जिसे पूरा करना शोभा के पिता द्वारा किसी भी प्रकार से संभव नहीं है। शोभा के पिता द्वारा काफी मान मनौवल करने के बावजूद लड़के के पिता नहीं मानते और दूल्हे को मंडप से उठ जाने का निर्देश देते हैं इस प्रकार दहेज के कारण विवाह नहीं हो पाता और यह रिश्ता दहेज की बलि चढ़ जाता है। 'लौटते हुए' कहानी भी दहेज के कारण टूटते हुए रिश्ते की कथा व्यक्त करती है। कथानायिका मृदुला के पिता गरीब होने के कारण दहेज नहीं दे पाते। शादी के कुछ ही दिनों बाद मृदुला का पति उसे अपने पिता से दहेज लाने को कहता है जिसे मृदुला का पिता नहीं दे पाते और उसका पति उसे तलाक दे देता है तथा दूसरी शादी कर लेता है।

काम और प्रेम की समस्या को झेलते हुए कई नारी पात्र राजेन्द्र यादव के कहानियो में देखने को मिलते हैं। 'प्रतीक्षा' कहानी की गीता इसी प्रकार की पात्र है। गीता अपने किशोरवय में अपने ट्युटर से प्रेम कर बैठती है। उसके पिता को पता चलने पर पिता ने उसके प्रेमी को बोरे में बंद करके पिटवाया था। उसका प्रेमी एक दिन वापस आएगा ऐसा कहकर चला जाता है। गीता ताउम्र उसकी प्रतीक्षा करती है मगर वह नहीं आता। अब गीता पैंतीस वर्ष की हो गई है और एक कॉलेज में प्रिंसिपल है। मगर अपने अन्दर के काम भावना को वह दवा नहीं पाती और नन्दन नामक युवती को गोद ले लेती है। गीता अपने अतृप्त काम भावना को पूरा करने के लिए नन्दन से लेसबियन सम्बन्ध कायम करती है। नन्दन अब उसके लिए सब कुछ है। वह उसके बगैर एक पल भी नहीं रह पाती और अपना सर्वस्व उसपर न्यौछावर करती है। 'अनुपस्थित संबोधन' कहानी की कथानायिका विवाह के बाद भी पूर्व प्रेमी से देह सम्बन्ध रखती है। उसके पति के द्वारा मना करने पर भी वह नहीं मानती और उसका पति आत्म हत्या कर लेता है जिसका कथा नायिका के ऊपर कोई असर नहीं होता और तेज के साथ सम्बन्ध कायम रखती है। तेज कथानायिका के साथ तो सम्बन्ध बनाता ही है उसकी बेटी सीमा के साथ भी वह सम्बन्ध कायम करता है जिसमें कथानायिका को कोई आपत्ति नहीं होती। सीमा अपने उम्र के लड़के के साथ प्रेम भी करती है और अपनी माँ के प्रेमी तेज अंकल के साथ भी यौन सम्बन्ध बनाती है। ऐसा करने में माँ एवं बेटी दोनों को कोई आपत्ती नहीं होती बल्कि दोनों में ईर्ष्या भाव भी देखने को मिलती है। 'खुले पंख टूटे डैने' की कथा नायिका मीलन भी उसी प्रकार की पात्र है। वह अपने जीवन में प्रेम में असफल रही है इस कारण वह विवाह नहीं करती और अविवाहित ही रहती है मगर अपने अन्दर के काम भाव को दवा नहीं पाती। अब वह सहकर्मी शिक्षिका मिसेज वर्मा के साथ रहती है। मिसेज वर्मा की अनुपस्थिति में एक दिन उसका बेटा बिपिन के प्रणय निवेदन को अस्वीकार नहीं कर पाती और उसके एक चुंबन से ही उसके अन्दर के सारे काम भाव जागृत हो जाते है जिसे वह दवा नहीं पाती। मिलन को अपनी भाभी के ताने सुनने पड़ते हैं कि.........''तुम किसी पुरूष पर जादू नहीं कर सकी।''[2] जहाँ लक्ष्मी कैद है' की लक्ष्मी भी इसी काम भावना के कारण हिस्टीरिया नामक रोग की शिकार हो जाती है।'सिद्धि' कहानी की माँ शक्ति कम उम्र में ही सन्यास धारण कर चुकी थी। वह मियाँजी की दुकान से जूतियाँ खरीद लेती हैं। उसे पहनते ही वह अतीत में चली जाती हैं। अतीत ही क्यों भविष्य में भी झांकना चाहती हैं। उन्हें लगता है कि भक्त लोग गिड़गिड़ा कर प्रार्थना कर रहे हैं। परन्तु ऐसे में उसके अन्दर की सारी इच्छाएँ दवी रह जाती है। जूती पहनकर जोहराबाई की तरह सुख और ऐश्वर्य भोगने की कल्पना में खो जाती है। कम उम्र में सन्यास ग्रहण करने के कारण दमित काम वासना बाहर आने के लिए छटपटाती है मगर आ नहीं पाती। उसके छदम्वेश से अंधविश्वासी समाज को तो ठगता ही है, खुद भी दुहरे–तीहरे व्यवहार में खोखले हो जाते हैं नतीजतन काम वासना अतृप्त रह जाती है।

राजेन्द्र यादव ने अपनी कहानियों में अंधविश्वास के कारण पीड़ित शोषित नारी की कथा को चित्रित किया है। 'जहा लक्ष्मी कैद है' कहानी की लक्ष्मी पिता के अंधविश्वास के कारण शोषित होती है। इसी अंधविश्वास के कारण लाला रूपाराम अपनी बेटी लक्ष्मी का विवाह नहीं करता। उसे अंधविश्वास है कि उसका विवाह करते ही घर से लक्ष्मी चली जाएगी। लक्ष्मी को पागलपन के दौरे आते हैं। वह दौरे के दौरान घर में कोहराम मचा देती है। घर के बर्तन फेंकने लगती है। ....''अपने कपड़े उतार कर फेंक देती है। बिलकुल नंगी हो जाती है, और जांघे पीट–पीटकर बाप से कहती है...ले, तूने मुझे अपने लिए रखा है, मुझे खा, मुझे चबा, मुझे भोग.....!''[3] इस प्रकार लाला रूपाराम अर्थलोलुपता और अंधविश्वास के कारण अपनी बेटी का शोषण करता है। 'नास्तिक' कहानी में अंधविश्वास के कारण कम उम्र में व्याही गई नीरा के मातृत्व का शोषण उसकी सास करती है। नीरा को बच्चा न होने पर उसकी सास गंगा मैया से मनौती मांगती है कि अगर बच्चा हुआ तो पहला बच्चा गंगा मैया को भेट कर देगी। नीरा को जब बच्चा होता है तो उसकी सास अंधविश्वास के कारण उसके बच्चे को पुरोहित को साथ लेकर मंत्रोचारण के साथ गंगाा में बहा देती है बेचारी नीरा तड़पती रह जाती है। उसके मातृत्व को कुचल दिया जाता है। उसके कलेजे के टुकड़े को अंधविश्वास की बलि चढ़ा दी जाती है।

राजेन्द्र यादव ने अपनी कहानियों में जहाँ नारी के विविध शोषण का चित्रण किया है वही उनकी कहानियों में स्वतंत्र विचारों वाली नारी पात्र भी देखने को मिलते हैं। 'नीराजना' कहानी की नायिका ऐसी ही पात्र है जो अपनी पिता पर बोझ न बनकर अपने को सबल बनाती है और सामाजिक बंधनों को तोड़कर अपने प्रेमी प्रो0 रवि कुमार के पास चली जाती है और उससे विवाह करती है। 'एक खुली हुई सांझ' कहानी भी कलकत्ता महानगर में एक स्वछंद विचारों वाली महिला की कहानी को चित्रित किया है। कलकत्ता जैसे भीड़ – भाड़ वाले शहर में कथानायिका एक शाम को विक्टोरिया पार्क जाती है जहाँ उसकी भेंट शिवेन से होता है। शिवेन से वह स्वछंद बातचित करती है। शिवेन उसके बारे में विभिन्न प्रकार की कल्पनाएँ करता है मगर जब वे वहाँ से उठते हैं और अलग होते हैं तो पार्क के गेट पर एक कार आकर रूकती है जिसमें से एक व्यक्ति बाहर आता है और मधु उससे परिचय करवाते हुए शिवेन से कहती है...... ''ये हैं मेरे हसबैंड.........और आप मेरे मित्र।''[4] 'प्रतिहिंसा' कहानी की कथनायिका भी अपने पति के द्वारा छोड़ दिए जाने पर एक क्रांतिकारी दल में शामिल हो जाती है। वह पुरूष प्रधान समाज की दकियानूसी मानसिकता से वह नफरत करने लगती है। 'चंदा का देश' कहानी की नायिका कल्पना अत्यंत संवेदनशील नारी है। वह जीवन नामक युवक से प्रेम करती है बावजूद इसके अपने पिता के कहने पर जीवन को सत्या नामक लड़की से शादी करने को कहती है। पिता की मृत्यु के बाद वह वेश्या बनती है और लोगों की सेवा भी करती है। समाज के लोग उसके वेश्या बनने पर क्या कहेंगे इसकी परवाह किए बिना वह अपना भविष्य खुद तय करती है। कालांतर में जीवन जब उसके पास आता है तो अपने स्वतंत्र विचारों के कारण उसे वह स्वीकार भी कर लेती है। 'खानदानी घर की बहू अपनी पति और ननद के अत्याचार को न सह पाने के कारण भी एक स्वतंत्र निर्णय लेती है और घर छोड़कर भाग जाती है। 'मेरा तन मन तुम्हारा है' कहानी की लीला अपने पति से आत्मीयता के लिए तरसती है और अपने पूर्व प्रेमी सुधाकर से मुलाकात होने पर वह उससे कहती है........''तुम ऐसा पराए पन की बात क्यों करते हों, भले ही मेरा तन किसी और का हो पर मन हमेशा–हमेशा के लिए तो तुम्हारा ही है। 'पास–फेल' कहानी में कथानायक की बेटी किसी गैर जाति के लड़के से प्रेम करती है। इस पर उसके पिता उसे कमरे में बंद करके रूई की तरह धुना था परन्तु लाख प्रतिबंध होने के बावजूद वह उसी से शादी करेगी ऐसा कहकर अपने पिता के विरूद्ध खड़ी हो जाती है। 'लकड़हारा' कहानी की शोभा की शादी दहेज के कारण टूटती है तो वह उठकर खड़ी हो जाती है और बारातियों को धमकाकर कहती है कि ....''आप लोग इस घर से सीधी तरह निकलेंगे या जूते खाकर निकलेंगे। जाइए खबरदार इस घर में पैर रखा। मैं कहती हूँ फौरन निकल जाइए इस घर से।''[5] हवन की लकड़ी हाथों में लिए भौचक इस तमाशे को देख रहे लकड़हारा सुमेरा का हाथ पकड़कर दुल्हे के खाली पट्टे पर बिठा देती है और उससे विवाह करती है। 'पास फेल' की बीना प्रेम करने के कारण पिता से पिटकर भी अपने निश्चय पर अडिग है कि.....''शादी करेगी तो वीरेन्द्र सिंह से.....नहीं तो जिन्दगी भर कुवाँरी ही रहेगी।''[6]

राजेन्द्र यादव की कई कहानियों में प्रेमी और पति के बीच पिसती नारी का चित्रण देखने को मिलता है। 'पुराने नाले पर नया फ्लैट' की कथानायिका अपने पति की बेवफाई से आहत है। उसका पति का दिप्ती नामक युवती से संबंध है जिसे वह अपनी पत्नी से छुपाते हैं। दीप्ती मानो कथानायिका के मस्तिष्क पर हावी हो गई है। मानो वह उसकी जगह पर है और इस प्रकार वह पिसती रहती है। 'पहली कविता' का कथानायक प्रमोद कॉलेज के दिनों में ही नामी कवि था। अंजली उसी कॉलेज में पढ़ती थी और प्रमोद के मार्ग दर्शन में ही उसने अपनी कवित्व शक्ति को संवारा था। प्रमोद शादी करके परिवार में उलझ जाता है और नौकरी वगैरह की दवाव में कविता लिखना छोड़ देता है। अंजली शादी के बाद भी लिख रही थी। एक दिन एक कवि सम्मेलन में भाग लेने के लिए अंजली प्रमोद के गाँव आती है। प्रमोद उसका स्वागत करता है और अपने घर ले जाता है जो प्रमोद की पत्नी को अच्छा नहीं लगता। वह प्रमोद पर शक करती है और दोनों में टकराव आरम्भ हो जाता है।

राजेन्द्र यादव की कहानियों में आर्थिक शोषण का रूप भी देखने को मिलता है। 'कुत्तिया' कहानी में सेठ एक गरीब नौजवान खूबसुरत लड़की को शादी का झांसा देकर कई वर्षों तक उसका यौन शोषण करता है और उसका मन भर जाता है तो उसे घर से निकाल कर सड़क पर फेंक देता है। 'सायकिल कहानी में नीता का पति आनन्द मध्यवर्गीय पात्र है। उसका मित्र है थड़ानी जो उच्च वर्ग का है। वह कीमती उपहार देकर आनन्द को प्रसन्न करना चाहता है मगर, उसकी दृष्टि आनन्द की

पत्नी नीता पर है। अर्थलोलुपता के कारण आनन्द थडानी को समझ नहीं पाता पर नीता खूब समझती है। नीता को अपनी पति की अर्थलोलुपता पर कोफ्त होता है।

अध्ययन का उद्देश्य

राजेन्द्र यादव मेरे प्रिय कथाकार हैं। उनसे मेरी पहली मुलाकात सन् 98 मे रानीगंज में संजीव सम्मान समारोह में हुई थी। उस समय करीब से मिलने और उन्हें जानने का मौका मिला था। बेबाक तरीके से उनका बात करना मुझे काफी भाया था। एक अन्य संदर्भ में 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' की पूर्व–पीठका में डॉ0 नगेन्द्र कहते हैं –''दृष्टि की अपनी सीमाएँ भी होती हैं। वह सभी कुछ एक साथ नहीं देख सकती, इसलिये अंगों पर होती हुई अंगी का अवलोकन करती हैं।'' (पृष्ठ 54) मैंने भी दृष्टि की सीमा को स्वीकारते हुए राजेन्द्र यादव की कहानियों को अध्ययन का विषय बनाया, ताकि उनके विस्तृत कहानी–संसार का विस्तृत अवलोकन हो सके। व्यक्ति अतीत की अपेक्षा वर्तमान से अत्यधिक जुड़ाव महसूस करे तो यह कतई अस्वाभाविक नहीं है। समकालीन कहानीकारों में राजेन्द्र यादव की कहानियों ने मुझे सर्वाधिक प्रभावित किया है। राजेन्द्र यादव नई कहानी के त्रयी कथाकारों मे एक प्रमुख स्तंभ हैं। उनकी रचनाओं में मध्यवर्गीय जीवन के विविध पहलू देखने को मिलते हैं। उनकी रचनाएँ पाठक के मन में पूर्वनिश्चित व्यवस्था के प्रति विद्रोह पैदा करती हैं। उन्होंने समाज के सबसे पिछड़े वर्ग, विशेष रूप से महिलाओं और दलितों को नया मंच दिया।

इन्हीं कारणों से लेखक ने राजेन्द्र यादव को अपने अध्ययन का उद्देश्य बनाया है।

निष्कर्ष

निष्कर्षतः हम कह सकते हैं कि आधुनिक समाज में स्त्री–पुरूष के सम्बन्धों और सोच में काफी परिवर्तन आया है जिसे राजेन्द्र यादव ने अपनी कहानियों में बारीकी से दर्ज किया है। जहाँ तक पुरूषवादी और स्त्रीवादी अवधारणा का प्रश्न है तो यह कहा जा सकता है कि यह एक झूठी अवधारणा है। इस सम्बन्ध में.... दोनों मनुष्य हैं। दोनों की जरूरत एक है। दोनों की भावना एक है। शरीर की बनावट से इस चीज में कोई फर्क नहीं पड़ता। इसलिए मैं समझता हूँ कि हमारे देश में और पूरी दुनिया में संस्कृति को बदलने की जो लड़ाई है, उसका एक बुनियादी मुद्दा होना चाहिए। स्त्री और पुरूष के विभाजन को खत्म करना। जिस प्रकार मर्दवाद एक झूठी अवधारणा है, जो मर्द को खुंखार बनाती है उसी प्रकार स्त्रीत्व की अवधारणा भी उतनी ही गलत और बेबुनियादी है जो स्त्री को घुटनटेकु बनाती है। उन्हें स्त्री बनाकर हम उसकी मनुष्यता को छीन लेते हैं।''[7]

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *हिन्दी कहानी का विकास, मधुरेश, सुमित प्रकाशन, तृतीय संस्करण 2001, पृ0–12*
2. *ढोल और अपने पार राधाकृष्ण प्रकाशन, 1986*
3. *जहाँ लक्ष्मी कैद है, राजेन्द्र यादव, पृ0–166, पहला पेपरबैक संस्करण 2009, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, दरियागंज, नई दिल्ली।*
4. *हासिल और अन्य कहानियाँ राजेन्द्र यादव , पृ0–26, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, 2008*
5. *जहाँ लक्ष्मी कैद है, राजेन्द्र यादव, पृ0–166, पहला पेपरबैक संस्करण 2009, राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड दरियागंज नई दिल्ली।*
6. *प्रतिनिधि कहानियाँ राजेन्द्र यादव, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली 2001*
7. *(वीर भारत तलवार) वीर भारत तलवार द्वारा जे. एन. यु. छात्रसंघ द्वारा आयोजित एक सभा में 29 जनवरी 2013 को दिया गया व्याख्यान) व्याख्याता जे. एन. यु. में प्रोफेसर हैं।)*